International Journal of Social Science and Humanities
www.humanitiesjournals.com
Online ISSN: 2664-8628 Print ISSN: 2664-861X
Received: 14-02-2023, Accepted: 27-02-2023, Published: 01-03-2023
Volume 5, Issue 1, 2023, Page No. 101-103

भारत की विदेश नीति, प्रवासी भारतीय एवं महात्मा गांधी

अखिलेश पाल
सहायक प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान विभाग, ईश्वर शरण डिग्री कोलेज, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
देश के विकास में प्रवासी भारतीयों के योगदान के महत्त्व को मान्यता देने और देश से जुड़ने हेतु मंच प्रदान करने के लिये भारत सरकार प्रतिवर्ष 9 जनवरी को प्रवासी भारतीय दिवस का आयोजन करती है। वर्ष 1915 में 9 जनवरी को ही महात्मा गांधी दक्षिण अफ्रीका से स्वदेश वापस आए थे। भारत सरकार ने प्रवासी भारतीय दिवस मनाने की शुरुआत वर्ष 2003 में लक्ष्मीमल सिंघवी समिति की सिफारिश पर की थी। वर्तमान केंद्र सरकार ने प्रवासी भारतीयों को जोड़ने के लिये महत्त्वपूर्ण कार्य किये हैं। सरकार का कोई भी प्रतिनिधि यदि किसी विदेश दौरे पर जाता है तो वह उस देश में रह रहे प्रवासी भारतीयों के बीच अवश्य जाते हैं। इससे प्रवासी भारतीयों के मन में अपनेपन की भावना जन्म लेती है और वे भारत की ओर आकर्षित होते हैं। भारतीय 'ब्रेन–ड्रेन' को 'ब्रेन–गेन' में बदलने के लिये भारत सरकार विदेश में बेहतर आर्थिक अवसरों की तलाश में जाने वाले कामगारों के लिये 'अधिकतम सुविधा' और 'न्यूनतम असुविधा' सुनिश्चित करना चाहती है।

मूलशब्दः विदेश नीति, प्रवासी भारतीय, महात्मा गांधी

देश के विकास में प्रवासी भारतीयों के योगदान के महत्त्व को मान्यता देने और देश से जुड़ने हेतु मंच प्रदान करने के लिये भारत सरकार प्रतिवर्ष 9 जनवरी को प्रवासी भारतीय दिवस का आयोजन करती है। वर्ष 1915 में 9 जनवरी को ही महात्मा गांधी दक्षिण अफ्रीका से स्वदेश वापस आए थे। भारत सरकार ने प्रवासी भारतीय दिवस मनाने की शुरुआत वर्ष 2003 में लक्ष्मीमल सिंघवी समिति की सिफारिश पर की थी। वर्तमान केंद्र सरकार ने प्रवासी भारतीयों को जोड़ने के लिये महत्त्वपूर्ण कार्य किये हैं। सरकार का कोई भी प्रतिनिधि यदि किसी विदेश दौरे पर जाता है तो वह उस देश में रह रहे प्रवासी भारतीयों के बीच अवश्य जाते हैं। इससे प्रवासी भारतीयों के मन में अपनेपन की भावना जन्म लेती है और वे भारत की ओर आकर्षित होते हैं। भारतीय 'ब्रेन–ड्रेन' को 'ब्रेन–गेन' में बदलने के लिये भारत सरकार विदेश में बेहतर आर्थिक अवसरों की तलाश में जाने वाले कामगारों के लिये 'अधिकतम सुविधा' और 'न्यूनतम असुविधा' सुनिश्चित करना चाहती है।भारत की विदेश नीति के निम्नलिखित मुख्य उद्देश्य हैं–

पहला उद्देश्य, भारत की विदेश नीति का पहला और व्यापक उद्देश्य–किसी अन्य देश की तरह–अपने राष्ट्रीय हितों को सुरक्षित करना है। 'राष्ट्रीय हितों' का दायरा काफी व्यापक है। उदाहरण के लिए हमारे विषय में इसमें शामिल हैः क्षेत्रीय अखंडता की रक्षा के लिए हमारी सीमाओं की सुरक्षा, सीमा पार आतंकवाद का मुकाबला करना, ऊर्जा सुरक्षा, खाद्य सुरक्षा, साइबर सुरक्षा। संक्षेप में, पहला उद्देश्य भारत को पारंपरिक और गैर–पारंपरिक खतरों से बचाना है।

दूसरा उद्देश्य, दूसरा उद्देश्य एक बाहरी परिवेश बनाना है जो समावेशी घरेलू विकास के लिए अनुकूल हो। मैं विस्तृत रूप सेः हमें विदेशी भागीदारों, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश, आधुनिक प्रौद्योगिकी के हस्तांतरण के रूप में पर्याप्त बाहरी आदानों की आवश्यकता है ताकि हम भारत में एक विश्वस्तरीय बुनियादी ढांचा विकसित कर सकें, ताकि मेक इन इंडिया, स्किल्स इंडिया जैसे हमारे कार्यक्रमों को विकसित किया जा सके। डिजिटल इंडिया, स्मार्ट सिटी, सफल हो सकते हैं, ताकि हमारे पास उन्नत कृषि और आधुनिक रक्षा उपकरण आदि हों। हाल के वर्षों में भारत की विदेश नीति के इस पहलू पर अतिरिक्त ध्यान केंद्रित करने के परिणामस्वरूप राजनीतिक कूटनीति के साथ आर्थिक कूटनीति को एकीकृत करके विकास की कूटनीति हुई है।

तीसरा उद्देश्य, पिछले 72 वर्षों में भारत एक गरीब विकासशील देश से उभरती हुई अर्थव्यवस्था में विकसित हुआ है और अब इसे एक महत्वपूर्ण वैश्विक अगुवा के रूप में गिना जाता है। इसलिए तीसरा महत्वपूर्ण उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि भारत की आवाज वैश्विक मंचों पर सुनी जाए और भारत आतंकवाद, जलवायु परिवर्तन, निरस्त्रीकरण, भेदभाव रहित वैश्विक व्यापार वैश्विक शासन की संस्थाओं के सुधार, जो दुनिया के बाकी के रूप में ज्यादा के रूप में भारत को प्रभावित करते हैं। जैसे वैश्विक आयामों के मुद्दों पर विश्व जनमत को प्रभावित करने में सक्षम हो।

चौथा उद्देश्य, भारत के 30 मिलियन सशक्त प्रवासी हैं जिनमें अनिवासी भारतीय और भारतीय मूल के व्यक्ति शामिल हैं, जो पूरेविश्व में फैले हुए हैं। पिछले कुछ वर्षों में यह मेजबान देशों में एक प्रभावशाली शक्ति के रूप में उभरा है। यह भारत और अन्य देशों के बीच मजबूत कड़ी प्रदान करता है और द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

एक महत्वपूर्ण उद्देश्य भारतवंशियों को शामिल करना और विदेशों में उनकी उपस्थिति से अधिकतम लाभ प्राप्त करना है, जबकि साथ ही यथासंभव उनके हितों की रक्षा करना है।

विदेश नीति के उद्देश्यो को प्राप्त करने के लिये कुछ मौलिक सिद्धंत भी हैं जो इस प्रकार हैं

1. पंचशील या पांच गुण जिन पर 29 अप्रैल, 1954 को हस्ताक्षर किए गए जो औपचारिक रूप से चीन और भारत के तिब्बत क्षेत्र के बीच व्यापार पर समझौते में प्रतिपादित किए गए थे, ने और बाद में विश्व स्तर पर अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के संचालन के आधार के रूप में कार्य करने के लिए विकसित हुए। ये पांच सिद्धांत हैं– (प) दूसरे की क्षेत्रीय अखंडता और संप्रभुता के लिए पारस्परिक सम्मान, (पप) परस्पर गैर आक्रामकता, (पपप) परस्पर गैर हस्तक्षेप, (पअ) समानता और पारस्परिक लाभ, और (अ) शांतिपूर्ण सह अस्तित्व।

2. भारत की विदेश नीति विश्व–शान्ति एव वसुधैव कुटुंबकम (विश्व एक परिवार है) के सिद्धान्त की प्रबल समर्थक रही है। सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास की अवधारणा। दूसरे शब्दों में समूचा विश्व समुदाय एक ही बड़े वैश्विक परिवार का एक हिस्सा है और परिवार के सदस्यों को शांति और सद्भाव रखना चाहिए, मिलजुल कर काम करना चाहिए और एक साथ बढ़ने और पारस्परिक लाभ के लिए एक दूसरे पर भरोसा करना चाहिए। भारत हमेशा ही अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति कायम रखने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय विवादों को शान्तिपूर्ण ढंग से सुलझाने का समर्थन करता रहा है।
3. भारत स्वयं भी उपनिवेशवाद और रंगभेद की नीति का दंश झेल चुका है। इसी कारण उसने अपनी विदेश नीति के सिद्धान्त के रूप में उपनिवेशवाद व रंगभेद की नीति के विरोध को प्रमुखता दी है। 1947 के बाद स्वतन्त्रता प्राप्त करने वाले सभी एशियाई व अफ्रीकी देशों की स्वतन्त्रता का भारत ने जोरदार समर्थन किया है।

भारतीय विदेश नीति और प्रवासी नीति के बीच संबंधों का भी भारत पर कई सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान प्रवासी भारतीयो पर स्वतंत्रता आंदोलन का गहरा प्रभाव पड़ा। भारतीय नेताओं विशेषकर महात्मा गांधी के आह्वान पर भारत की स्वतंत्रता के लिये महत्वपूर्ण कार्यकिये। पटेल, छेदी जगन और कोया जैसे भारतीय प्रवासियों ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और अपने–अपने देशों में राजनीतिक जागृति का नेतृत्व किया। गदर आंदोलन की शुरुआत, आजाद हिंद फौज (इंडियन नेशनल आर्मी) का गठन और कोमागाटा मारू घटना का भारत पर राजनीतिक प्रभाव पड़ा। बेशक, प्रवासी भारतीयों से आए महात्मा गांधी भारत के लिए राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए एक प्रकाश स्तंभ थे।

वैश्वीकरण और भारतीय अर्थव्यवस्था में आमूल–चूल संरचनात्मक परिवर्तनों के मद्देनजर, 1990 के दशक के खतरनाक विदेशी मुद्रा संकट से बाहर निकलने के लिए भारत डायस्पोरा को एक व्यवहार्य और संभावित स्रोत माना गया। भारतीय प्रवासियों के साथ जुड़ाव की बहाली के परिणामस्वरूप भारत के लिए आंतरिक और साथ ही बाहरी राजनीतिक और आर्थिक प्रक्रियाओं पर बड़े प्रभाव पड़े। भारत–अमेरिका नागरिक परमाणु सहयोग समझौते को तोड़ने, बर्टन संशोधन को हराने और 1998 में भारत के परमाणु परीक्षणों और 1999 में कारगिल युद्ध को उचित ठहराने के संबंध में अमेरिकी भारतीय समुदाय के शानदार पैरवी प्रयास प्रशंसनीय थे। विभिन्न अवसरों पर, कैपिटल हिल पर भारतीय कॉकस और विभिन्न अन्य वकालत और लॉबी समूह भारत के राष्ट्रीय और सुरक्षा हितों को आगे बढ़ाने में सहायक रहे।

दुनिया के विभिन्न हिस्सों में विविध भारतीय समुदाय की महत्वपूर्ण उपस्थिति का कई देशों के साथ भारत के राजनयिक संबंधों पर भी प्रभाव पड़ा है। खाड़ी देशों में भारतीय श्रमिकों का शोषण और दुर्व्यवहार हमेशा उन देशों के साथ भारत के संबंधों में चिंता का कारण रहा है। सरिता चावला मामला इस संबंध में एक उत्कृष्ट उदाहरण है। प्रथम खाड़ी युद्ध के दौरान, बड़ी संख्या में भारतीय प्रवासियों को भागने के लिए मजबूर होना पड़ा जिसके परिणामस्वरूप प्रेषण में कमी आई। इसने 1990 के दशक में भारत के लिए प्रतिकूल भुगतान संतुलन संकट को बढ़ा दिया। इराक और कुवैत युद्ध, हाल ही में उत्तरी अफ्रीका के लीबिया संकट ने क्षेत्रों के साथ हमारे विदेशी संबंधों पर प्रभाव को तेज कर दिया। इसके अलावा, सऊदी अरब में भारतीय श्रमिकों की निकासी पर हालिया विवाद ने भारत के राजनयिक संबंधों पर बड़ी चिंता पैदा कर दी है। ऑस्ट्रेलिया में भारतीय छात्रों पर नस्लीय हमले ने भी भारत–ऑस्ट्रेलिया संबंधों पर गंभीर चुनौती और प्रभाव उत्पन्न किया। भारतीय समुदाय और उनकी संबंधित सरकारों के बीच असहज संबंधों के कारण भी रिश्ते खराब हुए हैं। फिजी तख्तापलट का मतलब था कि भारतीय राजनयिक मिशन को बंद करना पड़ा। मलेशिया में भारतीयों के हिंद्राफ आंदोलन ने दोनों पक्षों की ओर से प्रतिक्रियाएँ भड़काईं। दक्षिण अफ्रीका में रेडियो जॉकी की टिप्पणी पर भारत से भी कुछ प्रतिक्रियाएँ आईं। इसके बाद, भारतीय मिशन को अफ्रीकी और भारतीय समुदायों के बीच निरंतर निगरानी रखने का निर्देश दिया गया। भारत और प्रवासी भारतीयों में फ्रांसीसी सिखों के समर्थन में वैश्विक सिख लामबंदी के बाद 2004 तक फ्रांस में सिखों द्वारा पगड़ी पहनने पर प्रतिबंध ने गति पकड़ ली। वैश्विक सिखों के दबाव के साथ–साथ भारत सरकार के दबाव में, विशेष रूप से एक सिख प्रधान मंत्री मनमोहन सिंह के नए नेतृत्व के तहत, फ्रांस ने एक समाधान खोजने का फैसला किया।

घरेलू मोर्चे पर, आपातकाल की घोषणा के दौरान, अमेरिका और ब्रिटेन में भारतीय प्रवासियों ने आपातकाल विरोधी समूहों के लिए एकजुटता दिखाई थी। वे पंजाब, गुजरात, केरल और आंध्र के राज्य चुनावों को वित्त पोषित कर रहे थे। अमेरिका, ब्रिटेन और कनाडा जैसे देशों में उनकी गहरी स्थिति के कारण, उनके सांसदों पर भारत के घरेलू मामलों में उनके हितों और चिंताओं पर विचार करने का दबाव था। 2002 में दंगे के बाद विदेश सचिव जैकस्ट्रॉ की गुजरात यात्रा उनकी सक्रिय भूमिका को दर्शाती है जब उनका समुदाय हिंसा के खतरे का सामना करता है। राजनीतिक और विदेश नीति के निहितार्थों के अलावा, भारतीय प्रवासियों के साथ जुड़ाव का आंतरिक सुरक्षा पर भी प्रभाव पड़ता है।

स्वतंत्रता–पूर्व अवधि के दौरान, हालांकि विदेश नीति का ध्यान ब्रिटिश हितों पर था, तत्कालीन भारत सरकार ने भारतीय प्रवासियों की विभिन्न चिंताओं की रक्षा करने में गहरी दिलचस्पी ली क्योंकि वे केवल जीवित रहने वाले 'ब्रिटिश विषय' थे। ब्रिटिश साम्राज्य में अन्यत्र। भारतीय राजनीतिक अभिजात वर्ग ने एकजुटता दिखाई थी और कांग्रेस प्रतिनिधियों के प्रतिनिधिमंडल के माध्यम से भारतीय प्रवासियों के साथ अपनी चिंताओं को साझा किया था। दरअसल, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नेतृत्व वाले स्वतंत्रता आंदोलन के लिए विदेशों में भारतीयों की दुर्दशा एक प्रमुख मुद्दा थी। भारतीय श्रमिक प्रवासियों की ओर से उनके परिवारों को घर वापस भेजा गया धन था। यह तर्क दिया जा सकता है कि घर और प्रवासी भारतीयों के बीच एक सहजीवी संबंध मौजूद था जो 1947 तक जारी रहा। 1947 में स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद, भारत की विदेश नीति नेहरू विरोधी आदर्शों द्वारा निर्देशित होने के परिणामस्वरूप प्रवासी नीति की स्थिति में एक आदर्श बदलाव आया। साम्राज्यवाद और नस्लीय रंगभेद, संप्रभुता और गुटनिरपेक्षता के प्रति सम्मान। आर्थिक मोर्चे पर, भारत ने आर्थिक विकास के लिए आत्मनिर्भरता को अपने लक्ष्य के रूप में चुना। भारत के तत्कालीन प्रधान मंत्री, जवाहरलाल नेहरू ने स्पष्ट रूप से घोषणा की कि जो जातीय भारतीय विदेश में रहना चुनते हैं, वे स्वयं को अपने संबंधित मेजबान भूमि के नागरिक या नागरिक मानेंगे। वास्तव में, उन्हें मेजबान संस्कृति के साथ एकीकृत होने और अपनी गोद ली गई भूमि की मुक्ति के लिए लड़ने के लिए प्रोत्साहित किया गया था। कुछ शांति के बाद, नेहरू के उत्तराधिकारी लाल बहादुर शास्त्री ने श्रीलंका में तमिलों के प्रश्न को हल करने के लिए श्रीमावो भंडारनायके के साथ एक समझौता किया। अन्यथा, नेहरूवादी प्रवृत्ति को लगातार सरकारों द्वारा 1980 तक जारी रखा गया।बाद में, इंदिरा गांधी के शासन के तहत भारत की विदेश नीति में नेहरूवादी आदर्शवाद

से यथार्थवाद पर ध्यान केंद्रित करने के बावजूद, प्रवासी नीति या भारतीय आर्थिक विदेश नीति में स्थिति में कोई बदलाव नहीं हुआ। वास्तव में, 1968–1972 के पूर्वी अफ्रीकी भारतीय संकट के दौरान उन्होंने खुद को विशेष रूप से अलोकप्रिय बना लिया। हालाँकि, तेल के झटके और भुगतान संतुलन संकट के कारण, सरकार ने विशेष रूप से खाड़ी भारतीयों के लिए प्रेषण–केंद्रित दृष्टिकोण पर जोर दिया। बाद में, जब राजीव गांधी के शासनकाल में विदेश नीति की प्राथमिकताएँ यथार्थवाद से अंतर–तीसरी दुनिया के सहयोग की ओर स्थानांतरित हो गईं, तो प्रवासी नीति में भी थोड़ा बदलाव आया। उन्होंने अपने सौहार्दपूर्ण समर्थन की पेशकश की और 1986 में फिजी भारतीय संकट को संभालने की कोशिश की, जिसने फिजी के साथ हमारे संबंधों में तनाव पैदा कर दिया था। इसके अलावा, भारतीय प्रवासी को एक रणनीतिक संपत्ति के रूप में महसूस करने के बाद, उन्होंने 21 वीं सदी के भारत के अपने दृष्टिकोण को साकार करने के लिए सैम पित्रोदा जैसी भारतीय प्रवासी प्रतिभा को आमंत्रित किया और 1984 में भारतीय प्रवासी मामलों के विभाग की स्थापना जैसे प्रशासनिक कदम उठाए। भाजपा के नेतृत्व वाली राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन सरकार के आने तक प्रवासी भारतीयों से निपटने या उनका दोहन करने के लिए कोई रचनात्मक कदम या सुसंगत और स्पष्ट नीतियां नहीं हैं।

शीत युद्ध की समाप्ति के बाद, बहु–ध्रुवीय केंद्रित विदेश नीति के उद्भव, वैश्विक अर्थव्यवस्था में संरचनात्मक बदलाव और 1990 के दशक में भारतीय अर्थव्यवस्था के निरंतर विदेशी रिजर्व संकट ने नरसिम्हा राव के नेतृत्व वाली भारत सरकार को कठोर आर्थिक घोषणा करने की सुविधा प्रदान की। उदारीकरण, निजीकरण, वैश्वीकरण (एलपीजी) जैसे सुधार। नए आर्थिक मॉडल के आगमन पर, भारतीय प्रवासी अनियमित और खुली भारतीय अर्थव्यवस्था के ढेर सारे आर्थिक अवसरों में भाग लेने में सक्षम हो गए। इसने भारतीय प्रवासियों के पर्याप्त निवेश और प्रेषण के कारण विदेशी मुद्रा संकट का समाधान किया। इसके बाद, भारत सरकार ने प्रवासी भारतीयों के प्रति अपना दृष्टिकोण बदल दिया और अपनी प्रवासी नीति की समीक्षा की। भाजपा के नेतृत्व वाली एनडीए सरकार ने आर्थिक विकास के लिए और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के अपने बड़े दृष्टिकोण के हिस्से के रूप में भारतीय प्रवासियों का लाभ उठाने के लिए बड़े कदम उठाए थे। भाजपा का घोषणापत्र भारतीय प्रवासियों पर उसकी स्थिति को दर्शाता है कि एनआरआई और पीआईओ का विशाल समुदाय भी 'महान भारतीय परिवार' का हिस्सा है। हमें अपनी मातृभूमि के साथ उनके सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और भावनात्मक संबंधों को लगातार मजबूत करने का प्रयास करना चाहिए। वे बौद्धिक, प्रबंधकीय और उद्यमशीलता संसाधनों का एक समृद्ध भंडार हैं। सरकार को भारत के सर्वांगीण विकास के लिए इन संसाधनों के निवेश को सुविधाजनक बनाने के लिए नवीन योजनाएं तैयार करनी चाहिए.

भाजपा अपने शासनकाल के दौरान अपने विविध प्रवासी भारतीयों को शामिल करने के लिए दीर्घकालिक और अल्पकालिक व्यापक नीतिगत उपायों का अनावरण किया गया जैसे कि भारतीय प्रवासियों पर उच्च स्तरीय समिति की नियुक्ति, पीआईओ कार्ड योजना की शुरुआत, 9 जनवरी को वार्षिक प्रवासी भारतीय दिवस का आयोजन । , प्रवासी भारतीय सम्मान पुरस्कार देना, दोहरी नागरिकता (ओसीआई) की पेशकश करना इत्यादि। बाद की यूपीए सरकार ने प्रवासी भारतीय मामलों का एक अलग मंत्रालय स्थापित किया, जिसने प्रवासी भारतीयों को शामिल करने के लिए कई पहल की हैं। उपरोक्त चर्चा से प्रवासी नीति और भारतीय विदेश नीति के पारस्परिक प्रभाव को समझा जा सकता है

सन्दर्भ सुची

1. https://www.mea.gov.in/distinguished-lectures-detail-hi.htm?***864***
2. https://grfdt.com/PublicationDetails.aspx?Type=Articles&TabId=***30***
3. http://bit.ly/***47***iVDWh
4. खन्ना वी. एन. भारत की विदेश नीति, विकास पब्लिशिंग हाऊस, नोएडा
5. पंत, पुष्पेश, जैन, श्रीपाल, (2000), 'भारतीय विदेश नीति : नये आयाम', मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ, 2000
6. जैन, बी० एम० (1995), 'प्रमुख देशों की विदेश नीतियां', राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, प्रथम संस्करण।